परमेश्वर की विभाजक रेखा
(13:42–14:7)

सुसमाचार के विरोधाभासों में से एक तथ्य यह है कि यह *मिलाता* भी है और *फूट* भी डालता है। यीशु मसीह का सुसमाचार इस संसार में मेल करवाने वाली महान्तम शक्ति है। प्रेरितों के काम की पुस्तक के अपने अध्ययन में, हम फलस्तीनी यहूदियों और यूनानी भाषा बोलने वाले यहूदियों को, यहूदियों और सामरियों, और यहूदियों और अन्यजातियों के साथ कलीसिया में मिलते देख चुके हैं। हमने संसार के भिन्न-भिन्न भागों, जीवन के भिन्न-भिन्न क्षेत्रों, चमड़ी के भिन्न-भिन्न रंगों से आए लोगों को यीशु में एक होते देखा है।

दूसरी ओर, सुसमाचार फूट भी डालता है। यीशु ने अपने चेलों को शिष्यता का अर्थ बताते हुए कहा, कि:

> यह न समझो, कि मैं पृथ्वी पर मिलाप कराने को आया हूं; मैं मिलाप कराने को नहीं, पर तलवार चलाने आया हूं। मैं तो आया हूं, कि मनुष्य को उसके पिता से, और बेटी को उसकी मां से, और बहू को उसकी सास से अलग कर दूं। मनुष्य के बैरी उसके घर ही के लोग होंगे (मत्ती 10:34–36)।

इस पाठ में, पौलुस और बरनबास के इकुनियुम में जाने के बारे में पढ़ते हुए हम देखेंगे कि "नगर के लोगों में *फूट पड़ गई थी*; इससे कितने तो यहूदियों की ओर, और कितने प्रेरितों की ओर हो गए" (14:4)। सुसमाचार *फूट डालता है* क्योंकि कोई इसे *स्वीकार करता है* और कोई *नकारता है*।

हम पौलुस की पहली मिशनरी यात्रा के मध्य में हैं। कुप्रुस में प्रचार करने के बाद पौलुस और बरनबास एशिया माइनर के उत्तर की ओर रवाना हो गए और फिर पिसिदिया के अन्ताकिया में चले गए। पिछले पाठ में, हमने अन्ताकिया की महासभा में पौलुस के प्रवचन का अध्ययन किया था। इस पाठ में हम देखेंगे कि अन्ताकिया के लोगों ने पौलुस के प्रवचन को कैसे ग्रहण किया और फिर हम देखेंगे कि इकुनियुम के लोगों की क्या प्रतिक्रिया थी। हम इस अध्ययन को "परमेश्वर की विभाजक रेखा" का नाम दे रहे हैं। हम में से हर एक को यह पूछना चाहिए, "मैं रेखा के किस ओर हूं ?"

अन्ताकिया में विभाजक रेखा (13:42-52)

फैसले (आयतें 42, 43)

आरम्भ में, अन्ताकिया की सभा में पौलुस के प्रवचन की प्रतिक्रिया वैसी ही थी जैसी उसने इच्छा की होगी। सभा के समाप्त होने के बाद, ''उन के बाहर निकलते समय लोग उन (पौलुस और बरनबास) से बिनती करने लगे,[1] कि अगले सब्त के दिन हमें ये बातें फिर सुनाई जाएं'' (आयत 42)। इसे एक प्रचारक यूं कहेगा कि लोगों का बिनती करना असामान्य सी बात है कि, ''कृपया यह प्रवचन अगले सप्ताह फिर सुनाएं''! ''और जब सभा उठ गई[2] तो यहूदियों और यहूदी मत में आए हुए भक्तों में से बहुतेरे पौलुस और बरनबास के पीछे हो लिए; और उन्होंने उन से बातें करके समझाया, कि परमेश्वर के अनुग्रह में बने रहो'' (आयत 43)। ऐसा कोई प्रमाण नहीं मिलता कि उन्होंने विश्वास किया था,[3] सो ''परमेश्वर के अनुग्रह में बने रहो'' का अर्थ यहां यह नहीं है कि ''परमेश्वर की संतान के रूप में, उसके अनुग्रह पर भरोसा करके आज्ञाकारी बने रहो।'' अध्याय 14 में जिस संदेश का पौलुस ने प्रचार किया, उसे ''उसके अनुग्रह के *वचन*'' (14:3) कहा जाता है। पौलुस और बरनबास इन लोगों से परमेश्वर के अनुग्रहकारी संदेश के लिए अपने मनों को खोले रखने का आग्रह कर रहे थे।

मुझे यकीन है कि पौलुस और बरनबास पूरा सप्ताह प्रचार करने और शिक्षा देने में लगे रहे। मुझे यह भी यकीन है कि जिन्होंने पौलुस को सुना था, उन्होंने हर एक को जिसे वे जानते थे, अगले सप्ताह आराधनालय में आने को कहा था। परिणामस्वरूप, ''अगले सब्त के दिन नगर के प्राय: सब लोग परमेश्वर का वचन सुनने को इकट्ठे हो गए'' (आयत 44)। पूरा शहर सुसमाचार को स्वीकार करने अथवा अस्वीकार करने के लिए ''परमेश्वर की विभाजक रेखा'' पर तैयार खड़ा था!

फूट (आयतें 45-49)

फूट उसी समय आरम्भ हो गई। यह फूट मुख्यत: यहूदियों और अन्यजातियों में थी; आयत 45 यहूदियों की प्रतिक्रिया के बारे में बताती है जो कि आयत 48 में अन्यजातियों की प्रतिक्रिया के विपरीत है। समय-समय पर कुछ यहूदी लोग इसे ग्रहण करते थे (14:1; 17:11 भी देखिए), और निश्चय ही सुसमाचार को सुनने वाले सभी अन्यजाति लोग सुसमाचार की बात नहीं मानते थे। तथापि साधारणत: यहूदी अस्वीकार करने वालों की ओर थे और अन्यजाति स्वीकार करने वालों की ओर।

अस्वीकार करने वाली ओर के लोगों की कुछ विशेष बातों पर ध्यान दें: ''परन्तु यहूदी भीड़ को देखकर *डाह से भर गए*'' (आयत 45क)। यहूदी लोग सुसमाचार फैलाने वाले थे (मत्ती 23:15), परन्तु वे मूसा की व्यवस्था को सुनने के लिए कभी भी पूरे नगर को प्रोत्साहित नहीं कर पाए थे। जब पौलुस और बरनबास को ''सुनने के लिए लगभग सारा नगर इकट्ठा हो गया,'' तो वे ईर्ष्या से भर गए,[4] सो उन्होंने वचन का विरोध किया।

उन्होंने पौलुस और बरनबास को कुछ देर के लिए बोलने दिया;[5] फिर वे "निन्दा करते हुए पौलुस की बातों के विरोध में बोलने लगे" (13:45ख)। सम्भवतः, वे यीशु के विषय में अपमानजनक बातें कह रहे थे। मूल भाषा में संकेत मिलता है कि वे कुछ समय के लिए इन प्रचारकों को धमकाते रहे।

यह स्पष्ट था कि पौलुस और बरनबास को उनका प्रवचन पूरा करने नहीं दिया जाएगा। फिर "पौलुस और बरनबास ने निडर होकर कहा, अवश्य था, कि परमेश्वर का वचन पहिले तुम्हें सुनाया जाता" (आयत 46क)। परमेश्वर की मूल योजना के अनुसार सुसमाचार "पहले तो यहूदी, फिर यूनानी" में सुनाया जाना था (रोमियों 1:16)। सुसमाचार को सुनने के लिए यहूदियों को पहले अवसर देने के बहुत से कारण थे: कालान्तर में वे परमेश्वर के विशेष लोग रहे थे; परमेश्वर उन्हें मसीह के आने के लिए तैयार कर रहा था, सो सुसमाचार को सबसे अधिक ग्रहण करने वाले लोग वे ही होने चाहिए थे।[6] आयत 47 एक अतिरिक्त कारण का सुझाव देती है: "क्योंकि प्रभु ने हमें यह आज्ञा दी है; कि मैंने तुझे अन्यजातियों के लिए ज्योति ठहराया है; ताकि तू पृथ्वी की छोर तक उद्धार का द्वार हो।" पहली बार हमें लग सकता है कि "हमें" विशेषकर पौलुस और बरनबास को कहा गया है,[7] परन्तु जब यहां उद्धृत पुराने नियम का हवाला (यशायाह 49:6) देखते हैं, तो हम पाते हैं कि परमेश्वर यहूदी कौम के साथ बात कर रहा था। स्पष्टतः, सुसमाचार के यहूदियों के पास पहले जाने का कारण यह था कि वे इसे स्वीकार कर सकें और फिर अन्यजातियों में ले जा सकें। परमेश्वर का मन कितना दुखी हुआ होगा जब एक कौम के रूप में, यहूदियों ने उस सबके बावजूद भी जो उसने उनके लिए किया था, सुसमाचार को नकार दिया![8]

दुखी होकर पौलुस और बरनबास ने यहूदियों को बताया, "परन्तु जब कि तुम उसे दूर करते हो[9], और अपने को अनन्त जीवन के योग्य नहीं ठहराते, तो देखो, *हम अन्यजातियों की ओर फिरते हैं*" (आयत 46ख)। "हम अन्यजातियों की ओर फिरते हैं" शब्द यहूदियों के मुंह पर तमाचे की तरह होंगे।

वाक्यांश "अपने को अनन्त जीवन के योग्य नहीं ठहराते" को मन में रेखांकित कर लें। अगली आयत में हम पढ़ेंगे कि "जितने अनन्त जीवन के लिए ठहराए गए थे, उन्होंने विश्वास किया" (आयत 48)। कई लोग इस आयत का इस्तेमाल यह प्रमाणित करने के प्रयास में करते हैं कि मनुष्य से उत्तर पाए बिना या उत्तर न देने की स्थिति में परमेश्वर अपनी इच्छा से फैसला लेता है कि किसका उद्धार होगा और किसका नाश। *परमेश्वर* ने अन्ताकिया के यहूदियों को अनन्त जीवन के अयोग्य नहीं ठहराया; बल्कि उन्होंने स्वयं सुसमाचार को ठुकराकर *अपने आप को* अयोग्य ठहराया!

वाक्यांश "देखो, हम अन्यजातियों की ओर फिरते हैं" का अर्थ यह नहीं कि पौलुस और बरनबास यहूदियों को अपनी सूची से निकाल रहे थे। अगले नगर में, पहला काम जो उन्होंने किया, वह महासभा में जाकर प्रचार करना था (14:1)। इन शब्दों का अर्थ था कि प्रचारक अब अन्ताकिया के आराधनालय में नहीं आएंगे, बल्कि वे वचन को ग्रहण करने वाले अन्यजातियों की ओर ध्यान लगाएंगे। "यहूदियों ने अन्यजातियों को जलने वाली

भूसी के रूप में देखा था; यीशु ने उन्हें परमेश्वर के लिए कटने के लिए तैयार फसल के रूप में देखा।''[10]

आइए अब वचन को ग्रहण करने वालों की कुछ और विशेषताओं पर ध्यान देते हैं: ''यह सुनकर अन्यजाति आनन्दित हुए, और परमेश्वर के वचन की बड़ाई करने लगे: और जितने अनन्त जीवन के लिए ठहराए गए थे, उन्होंने विश्वास किया'' (13:48)। स्पष्ट है कि यहूदी लोग ईर्ष्या करने लगे थे, परन्तु अन्यजाति आनन्दित थे। यहूदियों ने वचन का विरोध किया था, जबकि अन्यजातियों ने वचन को महिमा दी थी। स्पष्टत: यहूदियों ने विश्वास नहीं किया (देखिए 14:2), परन्तु अन्यजातियों ने किया था। यहूदियों ने अपने आप को अयोग्य ठहराया, परन्तु अन्यजाति ''अनन्त जीवन के लिए ठहराए गए।'' अनुवादित यूनानी शब्द ''ठहराए गए'' का अनुवाद ''जितनों ने विश्वास किया उतनों को अनन्त जीवन के लिए ठहराया गया'' हो सकता है। लिविंग बाइबल में ''जितने अनन्त जीवन चाहते थे, उन्होंने विश्वास किया'' है। यहूदियों को आत्मिक मृत्यु के लिए ठहराया गया, जबकि अन्यजातियों को आत्मिक जीवन के लिए!

पौलुस और बरनबास के प्रयास सकारात्मक फल ला रहे थे! कलीसिया दृढ़ता से स्थापित हो गई (14:21-23), और ''प्रभु का वचन उस सारे देश में फैलने लगा'' था (13:49)।

ख़तरा (आयतें 50-52)

वचन को न मानने वाले यहूदियों ने इन मिशनरियों को शान्त करने की नापाक कोशिशें कीं; अब उन्होंने कानूनी दांव लगाया। ''परन्तु यहूदियों ने भक्त और कुलीन स्त्रियों को और नगर के बड़े लोगों को उकसाया'' (आयत 50क)। ''भक्त [रोमी] और कुलीन स्त्रियों'' के लिए यहूदी महासभा में भाग लेना असामान्य बात नहीं थी, क्योंकि यहूदी लोग नैतिक सिद्धांतों की शिक्षा देते थे, जबकि रोमी नैतिकता बड़ी तेज़ी से गिर रही थी। यहूदियों ने झूठ बोलकर ''भक्त और कुलीन स्त्रियों को'' और उनके द्वारा उनके पतियों को उकसाया (जो ''नगर के बड़े लोग'' रहे होंगे)।[11] शायद यहूदियों ने सरकारी अधिकारियों को मना लिया था कि मसीहियत एक अवैध धर्म है और उस पर रोक लगनी चाहिए।[12] यहूदियों ने, हर हाल में, सरकारी अधिकारियों की मदद से, ''पौलुस और बरनबास पर उपद्रव करवाकर उन्हें अपने सिवानों से निकाल दिया'' (आयत 50ख)। इन प्रचारकों को सम्भवत: सीमा तक सशस्त्र पहरेदारों द्वारा पहुंचाया गया था।

पूर्व की ओर अपनी यात्रा जारी रखने से पहले, पौलुस और बनरबास एक असामान्य काम के लिए रुके। उन्होंने अपने जूते उतारे और उन्हें झाड़ा। आयत 51 कहती है, ''तब वे उनके साम्हने अपने पांवों की धूल झाड़कर इकुनियुम को गए।'' (देखिए मत्ती 10:14; मरकुस 6:11; लूका 9:5।) यहूदी इस औपचारिकता से परिचित थे, क्योंकि वे स्वयं ऐसा करते थे। यहूदी अन्यजातियों (''काफिरों,'' वे उन्हें ऐसे ही पुकारते थे) से इतनी घृणा करते थे कि जब वे अन्यजातियों के क्षेत्र से लौटते, तो अपने घरों में प्रवेश से पहले वे अपने जूतों

से "अन्यजातियों की धूल" झाड़ने के लिए रुकते। पौलुस और बरनबास अन्ताकिया के यहूदियों से कह रहे थे कि परमेश्वर के साथ सम्बन्ध में, अब *वे* "काफिर" थे। उन्होंने परमेश्वर के संदेश को नकार दिया था, इसलिए परमेश्वर ने उन्हें नकार दिया था!

आयत 52 बताती है कि अन्ताकिया में नये मसीहियों ने अपने अगुओं के बहिष्कार पर क्या प्रतिक्रिया दी। हमें लग सकता है कि यह आयत कहेगी कि "चेले भय से और अनिश्चितता से भर गए"; इसके विपरीत, इस आयत में हम पढ़ते हैं, "और चेले आनन्द से और पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होते रहे।"[13] पौलुस और बरनबास अपने पीछे पिसिदिया के अन्ताकिया में एक मज़बूत, लोचदार मण्डली छोड़कर गए थे।

इकुनियुम में विभाजक रेखा (14:1-7)

जब पौलुस एक जगह प्रचार नहीं कर पाया, तो उसने धैर्य नहीं छोड़ा; वह उसे छोड़कर किसी दूसरी जगह चला गया। वह और बरनबास रोमी सड़क पर पूर्व की ओर नब्बे मील तक, एक विशाल मैदान और फिर एक पहाड़ की चोटी पार करके, इकुनियुम[14] के प्राचीन नगर में पहुंच गए (13:51ख)। इकुनियुम एशिया माइनर के उस भाग का एक महत्वपूर्ण मार्ग, कृषि केन्द्र, विशालतम और अति महत्वपूर्ण नगर था।

फैसले (आयतें 1-3)

पौलुस और बरनबास के काम का ढंग अन्ताकिया में तय किया गया था: "इकुनियुम में ऐसा हुआ कि वे यहूदियों के आराधनालय में साथ-साथ गए" (14:1क)। परमेश्वर ने उनके प्रयासों में आशीष दी और उन्होंने "ऐसी बातें कीं, कि यहूदियों और यूनानियों दोनों में से बहुतों ने विश्वास किया"[15] (आयत 1ख)। हमें यह मानने में कोई असुविधा नहीं है कि उन "बहुतों" में यहूदियों से अधिक अन्यजाति थे।

शैतान यह अनुमति नहीं दे सकता कि सुसमाचार निर्विरोध सफल हो जाए। पुनः यहूदियों ने विरोध करने की अगुआई की। "परन्तु न मानने वाले यहूदियों ने अन्यजातियों के मन भाइयों के विरोध में उकसाए ["उनके मनों में विष भरा"; NIV], और बिगाड़ कर दिए" (आयत 2)। सच्चाई को सीखने से मोड़ने के लिए लोगों को कुछ भी झूठी बात बताने के लिए शैतान हिचकिचाएगा नहीं।

आयत 2 में "न मानने वाले" शब्द पर एक पल के लिए ध्यान दें; अनुवादित यूनानी शब्द "न मानने वाले" सुसमाचार को स्वीकार करने या अस्वीकार करने के सम्बन्ध में एक महत्वपूर्ण पाठ सिखाता है। "न मानने वाले" शब्द आयत 1 में "विश्वास करने वाले" शब्द के विपरीत है: कइयों ने, "विश्वास किया," जबकि दूसरों ने "नहीं माना।" तथापि, अनुवादित शब्द "न मानने वाले" अनुवादित शब्द "विश्वास किया" का नकारात्मक रूप नहीं है। बल्कि, आयत 2 में अनुवादित यूनानी शब्द "न मानने वाले" (मूल शब्द *apeitheo*) का अक्षरशः अर्थ है "नहीं मानी"[16] और यूहन्ना 3:36 में इसका अनुवाद ऐसे ही है । प्रेरितों 14:2 का मूल अनुवाद इस प्रकार से है : "परन्तु न मानने वाले यहूदियों

ने अन्य जातियों के मन भाइयों के विरोध में उकसाये... ।'' परमेश्वर की विभाजक रेखा के दोनों ओर में एक और महत्वपूर्ण अन्तर यह है कि एक ओर तो आज्ञा न मानने वाले हैं और दूसरी ओर आज्ञा मानने वाले।

हमारी शिक्षा का विरोध होने पर, हम में से बहुतेरे लोग कहीं और कोशिश करने की तैयारी करते हैं। ''साफ दिखाई दे रहा है कि परमेश्वर हमें यहां नहीं रहने देना चाहता,'' हम चिल्लाते हैं। परन्तु, पौलुस और बरनबास के लिए, बड़े विरोध से संकेत मिला कि आत्माओं की बड़ी कटाई की सम्भावना है, और यदि वे बोते रहते, तो अच्छी फसल काट सकते थे (ध्यान दें 1 कुरिन्थियों 16:9)। ''और वे बहुत दिन तक वहां रहे,[17] और प्रभु के भरोसे पर हियाव से बातें करते थे और वह उनके हाथों से चिह्न और अद्‌भुत काम करवाकर अपने अनुग्रह के वचन पर गवाही देता था'' (आयत 3; इब्रानियों 2:4 देखिए)।

फूट (आयत 4)

एक बार फिर, सुसमाचार के प्रचार ने लोगों में फूट डाली: ''परन्तु नगर के लोगों में फूट पड़ गई थी; इससे कितने तो यहूदियों की ओर, और कितने प्रेरितों [अथवा मिशनरियों] की ओर हो गए''[18] (आयत 4)। कई उनकी तरफ हो गए जिन्होंने सुसमाचार को अस्वीकार किया था अर्थात अविश्वासियों, आज्ञा न मानने वालों की ओर। दूसरे उनकी ओर हो गए जिन्होंने सुसमाचार को ग्रहण किया था अर्थात विश्वासियों, आज्ञा मानने वालों की ओर।

ख़तरा (पद 5-7)

पुनः, अविश्वासियों ने परमेश्वर के वक्ताओं को शान्त करने का यत्न किया: ''परन्तु... अन्यजाति और यहूदी उनका अपमान और उन्हें पत्थरवाह करने के लिए अपने सरदारों समेत उन पर दौड़े'' (आयत 5)। पथराव करना मृत्यु दण्ड देने के लिए एक यहूदी ढंग था, सो, यहां पर ''सरदारों'' सम्भवतः आराधनालय के अधिकारियों को कहा गया है- परन्तु यह तथ्य कि वे यह प्रयास करने के योग्य थे, दिखाता है कि उन्हें नगर के अधिकारियों की प्रतिक्रिया का भय नहीं था। जैसे-जैसे पौलुस और बरनबास अन्ताकिया से निकल रहे थे, वे रोमी शासन से दूर होते हुए, ख़तरनाक शत्रु के क्षेत्र में जा रहे थे।

अतीत की भांति, परमेश्वर के पूर्व प्रबन्ध से पौलुस को उस भीड़ की नीयत का पता चल गया। वह और बरनबास ''इस बात को जान गए, और लुकाउनिया[19] के लुस्त्रा और दिरबे नगरों में, और आसपास के देश में भाग गए'' (आयत 6; नोट मत्ती 10:23)। ये दो मनुष्य ज़रूरत पड़ने पर कष्ट उठाने के लिए तैयार थे, लेकिन मरने की उनकी कोई इच्छा नहीं थी। वे इकुनियुम में प्रभु के लोगों की एक मण्डली को छोड़ कर (आयतें 21-23)- लुस्त्रा में प्रचार करने के लिए दक्षिण की ओर चले गए (आयत 7)।

सारांश

अगले पाठ में हम लुस्त्रा की कहानी को देखेंगे। अभी आइए परमेश्वर की विभाजक रेखा पर अन्तिम बार नज़र डालें। आज आप और मैं वहां खड़े हैं जहां अन्ताकिया और इकुनियुम में पौलुस के श्रोता खड़े थे। सुसमाचार को सुनकर इसे स्वीकार करने या अस्वीकार करने का हमें अधिकार है; हम अपने आप को विभाजक रेखा के इस ओर या उस ओर रखते हैं। ऐसा करते हुए हमें अपने कार्य के परिणामों को समझना आवश्यक है। एक दिन प्रभु वापस आएगा, और यह दृश्य एक वास्तविकता होगी:

> और सब जातियां उसके साम्हने इकट्ठी की जाएंगी; और जैसे चरवाहा भेड़ों को बकरियों से अलग कर देता है, वैसे ही वह उन्हें एक दूसरे से अलग करेगा। और वह भेड़ों को अपनी दहिनी ओर और बकरियों को बाईं ओर खड़ी करेगा (मत्ती 25:32, 33)।

वह विभाजन *अन्तिम* अर्थात–अपरिवर्ती और अपरिवर्तनीय होगा! उस दिन हम कहां खड़े होंगे यह इस पर निर्भर करता है कि हम आज कहां खड़े हैं। यदि हम अब सुसमाचार को स्वीकार करते हैं, तो परमेश्वर उस समय हमें स्वीकार करेगा; यदि हम अब सुसमाचार को ठुकराते हैं तो परमेश्वर उस समय हमें ठुकराएगा!

विज़ुअल-एड नोट्स

नीचे दिया सरल चार्ट आपकी आंखों के सामने यह बात लाने में सहायक होगा कि सुसमाचार से किस प्रकार अन्ताकिया और इकुनियुम के लोगों में फूट पड़ी। इस चार्ट को एक बोर्ड पर लिखा जा सकता है, कपड़े या कागज़ के एक बड़े पर्दे पर बनाया जा सकता है, या प्रोजेक्टर में इस्तेमाल किया जा सकता है।

परमेश्वर की विभाजक रेखा

अधिकांश यहूदियों ने	ठुकराया जाना	स्वीकृति	**बहुत से यहूदियों ने**
ईर्ष्या की		आनन्द किया
वचन का विरोध किया		वचन का आनन्द लिया
अविश्वासी		विश्वासी
न मानने वाले		आज्ञा मानने वाले
परमेश्वर द्वारा ठुकराए गए	सुसमाचार	*परमेश्वर द्वारा स्वीकार किए गए*

प्रवचन नोट्स

सी. ब्रूस व्हाइट ने 13:44-52 पर अपने पाठ को इस प्रकार बांटा: (1) शत्रु डाह से भरते हैं (आयतें 45-47), (2) सत्य के खोजियों को सिखाया जाता है (आयतें 48-50), और (3) परमेश्वर की महिमा होती है (आयतें 51, 52)। उसने 14:1-7 पर एक पाठ, इन विभाजनों के साथ तैयार किया: (1) ग्रहण करने वाले श्रोता (आयत 1), (2) विद्रोही प्रतिक्रिया (आयतें 2-5), (3) और भूमिकाओं का नवीकरण (आयतें 6, 7)।

पाद टिप्पणियां

[1]वे पौलुस और बरनबास से बिनती कर रहे होंगे; वे आराधनालय के अगुओं से अगले सब्त पर पौलुस और बरनबास को बुलाने की बिनती कर रहे होंगे। [2]कई लोग यहां "उठ गई" को इस बात का संकेत मानते हैं कि पौलुस के संदेश से आराधनालय के अगुवे परेशान हो गए और उन्होंने चिढ़कर सभा भंग कर दी। यह तथ्य कि पौलुस और बरनबास को अगले सब्त पर फिर आने की अनुमति दी इसे असंभावित बना देता है। [3]विश्वास का उल्लेख आयत 48 तक नहीं मिलता। [4]यह सुझाव दिया गया है कि यहूदियों की अप्रसन्नता का एक और कारण यह था कि अन्यजाति वहां पर बैठे हुए थे जहां साधारतया वे बैठते थे! [5]आयत 46 संकेत देती है कि पौलुस और बरनबास दोनों बोल रहे थे। काफ़ी भीड़ इकट्ठी हो गई थी, इसलिए यह संभव है कि एक आराधनालय के अन्दर वचन सुना रहा हो जबकि दूसरा आराधनालय के बाहर उन लोगों में वचन सुना रहा हो जो अन्दर नहीं आ सके। उनका संदेश संभवत: पिछले सब्त में सुनाए गए संदेश का विस्तार था। [6]एक व्यक्तिगत स्तर पर, पौलुस "पहले यहूदियों के पास" जाने में प्रसन्न था, क्योंकि अपने लोगों के प्रति उसके मन में बड़ा लगाव था (रोमियों 9:1-5; 10:1-3)। [7]शब्द पौलुस और बरनबास पर ही लागू होते थे (प्रेरितों 26:16-18 में पौलुस को कहे यीशु के शब्दों पर ध्यान दीजिए), परन्तु विशेषकर उनके लिए नहीं थे। यही बुनियादी शब्द लूका 2:29-32 में यीशु के लिए हैं क्योंकि यीशु ने परमेश्वर द्वारा दी गई बहुत सी चुनौतियों को पूरा किया जो पहले यहूदियों को नहीं मिली थीं। [8]कई यहूदियों ने (जैसे कि प्रेरितों ने) यीशु को ग्रहण किया, परन्तु कौम के रूप में यहूदियों ने उसे नकार दिया (यूहन्ना 1:11)। [9]मूलत:, शास्त्र में "क्योंकि तुम इसे परे धकेलते हो" है। [10]लेखक अज्ञात। *द ऐक्ट्स ऑफ़ द अपोस्टल्ज़,* विलियम बार्कले द्वारा उद्धृत।

[11]लूका के पास औरतों की सकारात्मक तथा नकारात्मक शक्ति और प्रभाव के बारे में कहने को बहुत कुछ था। [12]यहूदी धर्म एक वैध धर्म था, परन्तु रोम द्वारा अभी मसीहियत को वैध अथवा अवैध घोषित नहीं किया गया था। [13]मसीहियों पर हाथ रखकर उन्हें नेतृत्व देने में सहायता करने के लिए उन पर हाथ रखना पौलुस की आदत थी, इसलिए "पवित्र आत्मा से परिपूर्ण" चमत्कारी अर्थ हो सकता है। तथापि, इस संदर्भ में, इसका संभव अर्थ है कि, विद्वेष से घिरे होने के बावजूद, इन मसीहियों को पवित्र आत्मा के वास से प्राप्त फल अर्थात प्रेम, आनन्द, मेल, धीरज आदि का आनन्द मिल रहा था (गलतियों 5:22, 23)। [14]"इकुनियुम" नाम "प्रतिमाओं" के लिए यूनानी शब्द से निकला है। यूनानी दंतकथा के अनुसार, "जलप्रलय" के बाद इकुनियुम में मिट्टी की प्रतिमाएं जीवंत हो गईं और संसार में फिर से लोग बढ़ने लगे। [15]यहां "यूनानियों" संभवत: यूनानी भाषा बोलने वाले सभी यूनानियों को कहा गया। [16]यूनानी शब्द का अक्षरश: अर्थ है "मानने से इन्कारी"- अन्य शब्दों में आज्ञा मानने से इन्कार किया। यूहन्ना 3:36 नये नियम के बहुत से पदों में से एक है जो विश्वास और आज्ञाकारिता के लिए शब्दों को अदल-बदल कर इस्तेमाल करते हैं। आम तौर पर शब्द "विश्वास" का इस्तेमाल प्रभु को हमारे उत्तर में शामिल सभी बातों को लाने के व्यापक अर्थ में किया जाता है। [17]हम नहीं जानते कि "बहुत दिन" कितना लम्बा समय था। कम से कम, यह कई महीने होंगे। [18]लूका ने यहां "प्रेरितों" शब्द का उपयोग सामान्य अर्थ में किया ("प्रेरितों के काम, भाग-1" में शब्दावली में देखिए "प्रेरित")। [19]लुकाउनिया गलतिया के इलाके में एक और ज़िला था।